myNachiketa
Gita Concepts for Kids

गीता जयंती विशेष

भगवद् गीता

15 श्लोक अर्थसहित

अपने भीतर के ज्ञान को जगाएँ

परिचय

गीता जयंती वह शुभ दिन है जब भगवान श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में अर्जुन को भगवद् गीता का दिव्य ज्ञान दिया था।

भगवद् गीता जीवन को संतुलन, साहस और स्पष्टता के साथ जीने का तरीका बताती है। कई पीढ़ियों से लोग गीता पढ़ते आए हैं और इसकी शिक्षाओं में शक्ति, शांति और मार्गदर्शन पाते रहे हैं। गीता का हर श्लोक हमें याद दिलाता है कि सच्ची शांति तब मिलती है जब हम अपने असली स्वरूप को जान जाते हैं और सही भाव से कार्य करते हैं।

myNachiketa में, हम इस प्राचीन ज्ञान को बच्चों और परिवारों के लिए सरल, रोचक और अर्थपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

इस पुस्तक में 15 चुने हुए श्लोक हैं जो आसान अर्थ और सरल व्याख्या से श्रीकृष्ण की शिक्षाओं का सार समझाते हैं।

इस गीता जयंती पर, आइए श्री कृष्ण के शब्दों को अपने हृदय में उतारें और अपने भीतर ज्ञान का प्रकाश जगाएँ।

इस पुस्तक को कैसे पढ़ें

इस पुस्तक को पढ़ने के लिए आपको केवल 30 मिनट का समय चाहिए। आप इसे गीता जयंती के दिन या उससे एक-दो दिन पहले भी पढ़ सकते हैं।

आप इस पुस्तक को प्रिंट कर सकते हैं या इसे अपने आईपैड, टैबलेट या फ़ोन पर भी पढ़ सकते हैं। इससे पूरे परिवार के लिए इसे पढ़ना आसान होगा।
सब लोग साथ बैठकर इस पुस्तक का आनंद ले सकते हैं।

कृपया श्लोक 1 से शुरू करें। सभी मिलकर पहले श्लोक को बोलें। फिर सभी श्लोक का अर्थ पढ़ें और समझें। यह आवश्यक है ताकि आप श्लोक का आनंद ले सकें और उसके गहरे संदेश को जीवन में उतार सकें।
इसी तरह एक-एक श्लोक को पढ़ते और समझते जाएँ।

ये हमारे सुझाव हैं। कृपया जिस प्रकार आपको सहज लगे, उसी प्रकार पढ़ें।
अपने अनुभव और सुझाव हमारे साथ बाँटें
info@mynachiketa.com

1

अर्जुन की दुविधा: एक योद्धा की उलझन

कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में, अपने ही रिश्तेदारों और गुरुओं को सामने खड़ा देख अर्जुन का मन दो हिस्सों में बँट जाता है। एक तरफ उन्हें एक योद्धा का कर्तव्य याद आ रहा है, तो दूसरी तरफ अपने प्रियजनों के प्रति उनका प्रेम।

अध्याय 1, श्लोक 28-29

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ।
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ।।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ।
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक् चैव परिदह्यते ।।

अर्जुन ने कहा: हे कृष्ण! अपने ही परिवार और प्रियजनों को युद्ध के लिए तैयार खड़ा देखकर मेरे पैर निर्जीव हो गए हैं, मुँह सूख गया है, पूरा शरीर काँप रहा है और रोएँ खड़े हो रहे हैं। गांडीव धनुष हाथ से छूट रहा है और मेरा पूरा शरीर जल रहा है।

2

अर्जुन का श्रीकृष्ण के प्रति समर्पण

अर्जुन समझ जाते हैं कि वह अपने भीतर के इस संघर्ष को खुद नहीं जीत सकते, इसलिए वे कृष्ण से सहायता माँगते हैं।

अध्याय 2, श्लोक 7

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि
त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥

अर्जुन ने कहा: मेरा स्वभाव मोह और कमजोरी से ग्रसित हो गया है, और कर्तव्य को लेकर मेरा मन भ्रमित हो गया है। मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया स्पष्ट रूप से बताइए कि मेरे लिए क्या सही है। मैं आपका शिष्य हूँ। आपकी शरण में आया हूँ, मुझे मार्ग दिखाइए।

3

श्रीकृष्ण अर्जुन को आत्मा के शाश्वत स्वरूप का ज्ञान देते हैं

कृष्ण देखते हैं कि अर्जुन अपने शरीर और भावनाओं को ही सबसे बड़ा सच मान रहे हैं। यह देखकर वे उन्हें, उनके सच्चे स्वरूप (आत्मा) का ज्ञान कराते हैं।

अध्याय 2, श्लोक 23

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि
नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो
न शोषयति मारुतः॥

कृष्ण ने कहा: आत्मा को न कोई हथियार काट सकता है, न अग्नि उसे जला सकती है। पानी उसे गला नहीं सकता और हवा उसे सुखा नहीं सकती।

4

श्रीकृष्ण अर्जुन को अपना कर्तव्य निभाने का आदेश देते हैं

आत्मा के अविनाशी स्वरूप को समझाने के बाद, कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि सही के साथ खड़े रहो और अपने कर्तव्य को निभाओ, बिना लाभ-हानि की चिंता किए।

अध्याय 2, श्लोक 38

सुखदु:खे समे कृत्वा लाभलाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥

कृष्ण ने कहा: दुख-सुख, लाभ-हानि और जीत-हार, इन सभी को समान मानकर अपना कर्तव्य निभाओ। ऐसा करने से तुम पर कोई पाप नहीं लगेगा।

5

कृष्ण का अर्जुन को निष्काम कर्म का संदेश

अर्जुन अपने कर्म के परिणाम को लेकर बहुत चिंतित हैं, इसलिए युद्ध करने से हिचकिचा रहे हैं। तब कृष्ण उन्हें समझाते हैं कि परिणाम तुम्हारे हाथ में नहीं है, लेकिन कर्म करना तुम्हारा कर्तव्य है।

अध्याय 2, श्लोक 47

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

कृष्ण ने कहा: तुम्हारा अधिकार सिर्फ कर्म करने में है, उसके फल में नहीं। अपने किए हुए कर्म के फल को अपना न मानो और न ही कर्म न करने का विकल्प चुनो।

6

अर्जुन का प्रश्न: ज्ञान बड़ा या कर्म?

अर्जुन उलझन में हैं क्योंकि कृष्ण ज्ञान को कर्म से श्रेष्ठ बताने के बाद भी उन्हें कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। तब कृष्ण समझाते हैं कि कर्म क्यों आवश्यक है।

अध्याय 3, श्लोक 4

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥

कृष्ण ने कहा: केवल काम न करने से कोई कर्म से मुक्त नहीं होता, और सिर्फ कर्म छोड़ देने से कोई पूर्णता प्राप्त नहीं करता।

7

कृष्ण अपनी इच्छा से अवतार लेते हैं

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि वे निराकार, सर्वव्यापी, और अनंत शक्तियों से भरे हैं, लेकिन फिर भी वे अपनी इच्छा से रूप धारण करते हैं।

अध्याय 4, श्लोक 6

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया॥

कृष्ण ने कहा: मैं अजन्मा हूँ, मेरा स्वरूप कभी बदलता नहीं, और मैं सभी जीवों का स्वामी हूँ; फिर भी, अपनी प्रकृति को नियंत्रित करके, मैं अपनी ही माया से अवतार लेता हूँ।

8

श्रीकृष्ण : धर्म के पुनर्स्थापक

श्रीकृष्ण अपना उदाहरण देकर अर्जुन का कर्तव्य करने में विश्वास जगाते हैं। वे समझाते हैं कि सर्वोच्च होने के बाद भी वे अपने कर्तव्य से दूर नहीं रह सकते और धर्म की रक्षा और पुनः स्थापना के लिए बार-बार अवतार लेते हैं।

अध्याय 4, श्लोक 7

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

कृष्ण ने कहा: हे अर्जुन! जब-जब धर्म का पतन होता है और अधर्म बढ़ने लगता है, तब मैं स्वयं अवतार लेता हूँ।

9

सच्चा भक्त अपना कर्म भगवान को समर्पित करता है

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि कर्म नहीं, बल्कि उसके पीछे की भावना यह तय करती है कि हमें मुक्ति मिलेगी या बंधन।

अध्याय 5, श्लोक 12

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥

कृष्ण ने कहा:: जो व्यक्ति शांत मन से कर्म करता है और फल की इच्छा छोड़ देता है, उसे सच्ची शांति मिलती है। लेकिन जो व्यक्ति अस्थिर है और इच्छा के कारण फल से जुड़ा रहता है, वह मोह से बँध जाता है।

10

मन सबसे अच्छा मित्र हो सकता है या सबसे बड़ा शत्रु

कृष्ण बताते हैं कि मन का सही उपयोग हमें ऊपर उठाता है, क्योंकि कर्म से मुक्ति एक स्थिर और शांत मन से ही मिलती है।

अध्याय 6, श्लोक 5

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन: ॥

कृष्ण ने कहा:: मनुष्य को अपने ही प्रयास से अपने मन को ऊपर उठाना चाहिए और इस मन को कमजोर नहीं बनने देना चाहिए। क्योंकि वही मन उसका सबसे बड़ा मित्र भी है और सबसे बड़ा शत्रु भी।

11

कृष्ण सभी गुणों के स्रोत हैं

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि सभी भावनाएँ और गुण उन्हीं से उत्पन्न होते हैं। इसलिए अर्जुन को अपने विचारों को अपना न मानकर, कृष्ण के मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करना चाहिए।

अध्याय 10, श्लोक 4–5

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावाः भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥

कृष्ण ने कहा: बुद्धि, ज्ञान, भ्रम का न होना, धैर्य, सत्य, इन्द्रियों पर नियंत्रण, हृदय की शांति, सुख, दुःख, जन्म, मृत्यु, भय और निर्भयता, अहिंसा, समानता, संतोष, तप, दया, अच्छा और बुरा नाम—सभी प्रकार के गुण केवल मुझसे उत्पन्न होते हैं।

12

श्रीकृष्ण ने अपने विश्वरूप का दर्शन दिया

कृष्ण अर्जुन को विशेष दिव्य दृष्टि देते हैं, ताकि वह उनके दिव्य विश्वरूप को देख सकें।

अध्याय 11, श्लोक 8

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षु: पश्य मे योगमैश्वरम् ॥

कृष्ण ने कहा: लेकिन तुम अपनी साधारण आँखों से मुझे नहीं देख सकते। मैं तुम्हें दिव्य दृष्टि देता हूँ; देखो मेरी परम योग शक्ति।

नोट: यहाँ दिव्य दृष्टि का मतलब यह नहीं कि अर्जुन को कोई खास आँखें मिल गईं। बल्कि इसका अर्थ है वह ज्ञान का प्रकाश जो कृष्ण ने अर्जुन को दिया, जिससे वह उनका दिव्य रूप देख पा रहे हैं।

13

अर्जुन ने कृष्ण को सर्वोच्च शक्ति के रूप में जाना

अर्जुन ने कृष्ण का अद्भुत और अकल्पनीय रूप देखा। उन्होंने कृष्ण को ब्रह्मांड की शुरुआत, मध्य और अंत के रूप में देखा।

अध्याय 11, श्लोक 18

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥

अर्जुन ने कहा: हे कृष्ण! आप अनंत और सर्वोच्च हैं, यह जानना जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है। आप इस ब्रह्मांड के महान रक्षक हैं, शाश्वत धर्म के पालनहार हैं। आप अनादि पुरुष हैं, यह मेरा विश्वास है।

14

कृष्ण बताते हैं कि वे ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं

अपना विराट रूप दिखाने के बाद, कृष्ण अर्जुन के सभी संदेह दूर कर देते हैं और स्पष्ट करते हैं कि वे ही ब्रह्म हैं।

अध्याय 14, श्लोक 27

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च ।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च ॥

कृष्ण ने कहा: मैं ही ब्रह्म हूँ, जो अमर है, अपरिवर्तनीय है। मैं ही सनातन धर्म हूँ और पूर्ण आनंद हूँ।

15

केवल श्रीकृष्ण के प्रति समर्पण

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि अलग-अलग कर्तव्यों के पालन की चिंता मत करो। बस अपने आप को पूरी तरह से मुझमें समर्पित कर दो और मेरी कृपा पर भरोसा रखो।

अध्याय 18, श्लोक 66

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच: ॥

कृष्ण ने कहा: सभी धर्मों को त्यागकर केवल मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुम्हें हर पाप से मुक्त कर दूँगा; बिल्कुल चिंता मत करो।

निष्कर्ष

हम अर्जुन के साथ अपनी इस यात्रा के अंत तक पहुँचते हैं, ये 15 विवेकपूर्ण तरीके से चुने हुए श्लोक हमें यह याद दिलाते रहें कि भ्रम, डर और संदेह कमज़ोरी नहीं है, बल्कि खुद को गहराई से समझने और स्पष्टता से सोचने का संकेत देते हैं।

जैसे अर्जुन को श्रीकृष्ण की शिक्षा से साहस, दिशा और शांति मिली, वैसे ही हम भी अपने भीतर के संघर्षों को ज्ञान में बदल सकते हैं, बस थोड़ा रुककर अपने आप को सही समझ से जोड़ने की ज़रूरत है।

गीता की सीख केवल युद्धभूमि के लिए नहीं है, बल्कि हर उस पल के लिए है जब हम दुविधा में हों, दुखी हों, या समझ न आए कि क्या करना चाहिए। जब हम याद रखते हैं कि ज्ञान हमेशा हमारे लिए उपलब्ध है, और हम कभी अकेले नहीं हैं, तो हम शांति, हिम्मत और उद्देश्य के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

ये शिक्षाएँ आपके साथ एक भीतरी आवाज़ की तरह बनी रहें और आपके हर विचार, हर कार्य और हर निर्णय को सत्य, करुणा और आंतरिक स्वतंत्रता की ओर ले जाती रहें।

myNachiketa के विषय में

myNachiketa में हम किताबों और अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से गीता, वेद और उपनिषदों के अनमोल ज्ञान को बच्चों तक रोचक और प्रभावी तरीके से पहुँचाते हैं। हम पुस्तकों, वर्कशॉप, कविताओं, वीडियो और गतिविधियों का एक व्यापक संग्रह प्रस्तुत करते हैं, जो बच्चों के लिए गीता के ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया को रोमांचक और सरल बनाती हैं।

हमारा प्रभाव/ हमारी उपलब्धि

- ✓ 1,00,000 से अधिक किताबों का विक्रय।
- ✓ हमारी किताबें हिंदी और अंग्रेज़ी में Amazon और myNachiketa वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।
- ✓ हमारी किताबें Amazon पर बेस्टसेलर हैं, 4.6+ रेटिंग के साथ, और यह माता-पिता और शिक्षकों द्वारा विश्वसनीय मानी जाती हैं।

हमने Instagram, Facebook और YouTube पर 50,000 से अधिक फॉलोअर्स के साथ एक सक्रिय और लगातार बढ़ती ऑनलाइन समुदाय बनाया है।

हमारी टीम ने पूरे भारत में 20 से अधिक पुस्तक मेलों और कार्यक्रमों में भाग लिया है, जहाँ हमने हजारों लोगों के साथ गीता का शाश्वत संदेश साझा किया।

हर रविवार, हम बच्चों के लिए मुफ्त ऑनलाइन गीता कक्षाएँ भी आयोजित करते हैं, ताकि उनमें नैतिक मूल्य, ज्ञान और आध्यात्मिक शिक्षा के प्रति प्रेम विकसित हो।

OUR BOOKS

Age: 6 to ∞

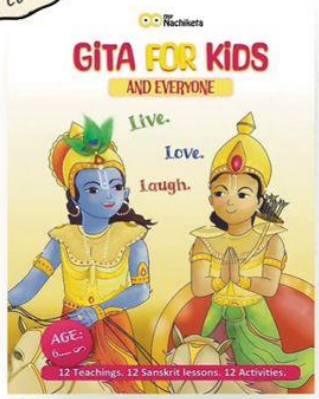

Age: 7 to 12

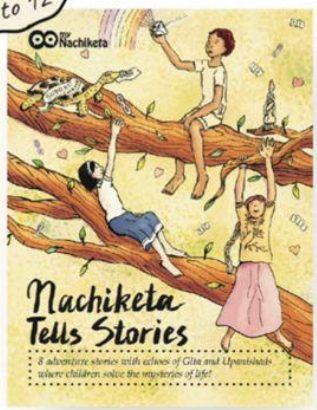

Age: 6 to ∞

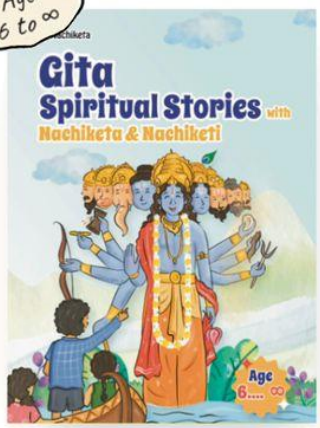

Age: 9 to 15

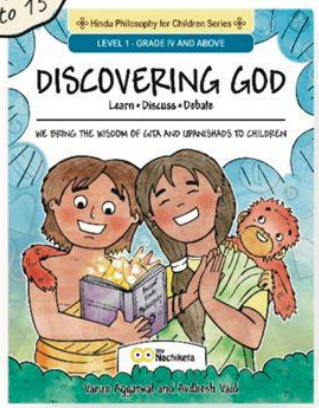

Age: 4 to 12

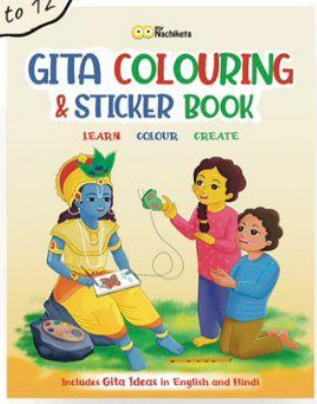

Age: 12+ years

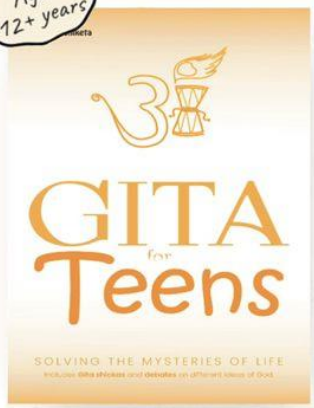

AND MANY MORE.....

To explore our Books:
www.mynachiketa.com/books

ORDER NOW

For USA
https://www.mynachiketa.us/

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते

इस संसार में ज्ञान के समान कुछ भी पवित्र नहीं

गीता के हर श्लोक के माध्यम से कृष्ण के और निकट आइए।

पढ़ें, जाने और जीएँ।

my Nachiketa

Gita Concepts for Kids

http://www.mynachiketa.com

https://www.mynachiketa.us/

support@mynachiketa.com

@mynachiketa